PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 6, ISSUE 1

मनमोहन सहगल के उपन्यास में चित्रित शैक्षिक समस्याएँ

सुनिता रा. हुन्नरगी
एम. ए. बी. एड. (हिन्दी)
पीएचडी शोधार्थी हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर
(महाराष्ट्र) भारत

प्रस्तावना

डॉ. मनमोहन सहगल मूलत: प्राध्यापक लेखक, शोधनिर्देशक, आलोचक है। आपका जन्म 15 अप्रैल 1932 में हुआ। इनके अन्य सोलह उपन्यास है। इस शोधापत्र का उद्देश्य है कि सहगलजी के उपन्यासों में चित्रित शैक्षिक समसयाओं को प्रस्तुत करना है। आज की आधुनिक शिक्षा-प्रणाली तथा शिक्षण-संस्थाओं में उभरते हुए नित्य-नवीन समस्याओं का विवेचन किया जाएगा।

"उच्च शिक्षा का अर्थ है, सामान्य रुप से सबको दी जानेवाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष तथा सूक्ष्म शिक्षा"। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक, विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी, महाविद्यालयों, लिबरल, आर्टकॉलेजो एवं, प्रोद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है, जो प्राय:

ऐच्छिक होता है। इसके अन्तर्गत स्नातक परास्नातक एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते है।

सामाजिक, आर्थिक समस्याओं की भॉती शिक्षा जगत में भी धांधली मची हुई है। आज शिक्षा प्रणाली भ्रष्ट हो चुकी है। आज की शिक्षा प्रणाली व्यर्थ साबित हो रही है, आज शिक्षा जगत में हजारों बेरोजगार घूमते है, अगर शिक्षा प्रणाली ठीक होती तो युवा पुरुषों को बेकार में नाम दर्ज कराना न पडता। आज की गलत शिक्षा प्रणाली के कारण भारत में रोजगार नहीं मिलता, इसलिए लोगों को रोजगार के लिए विदेश जाना पडता है। उसमें भी भ्रष्ट राजनिती का शिकार होना पडता है। शिक्षा किसी भी देश के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक तत्वों में से एक है, एक शिक्षित समाज ही देश को उन्नत और समृद्ध बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा विहीन समाज साक्षात पशु के समान बताया गया है।

डॉ. मनमोहन सहगलजी का उपन्यास जिंदगी और जिंदगी उपन्यास में नायक उच्च शिक्षा पाकर भी उचित रोजगार न मिलना तथा उदर निर्वाह के लिए टयूशन लेना है। इस उपन्यास का नायक अध्यापक है। अत: समाज का प्रत्येक व्यक्ति अभिनेता है। मनुष्य जिस समाज में वह जी रहा है उसमें सम्मान से जीने के लिए उसे अभिनय करना पडा है। इस उपन्यास का नायक दीपक भी जिंदगी जीने के लिए विवश है।

इस उपन्यास का नायक दीपक उन दिनों देहली की एक कोचिंग एकडेमी में लडकियों की क्लासेस लेने के लिए नियुक्त था। अवस्था उन दिनों 21 वर्ष की रही होगी। इस अवस्था में पंजाबी नौजवान के पांव जमीन पर नहीं पडते। वे हवा में तैरते और आसमान से बातें करते है। परन्तु मुझ सरीखा जतीम लडका जो पांच वर्ष पूर्व ही पिता के प्यार को खो चुका था अवस्थानुकुल अल्हड जिन्दगी में कदम धरते घबराता था। दीपक की समस्याएँ थी, अपना और अपनी माता की पेट पालना, उच्च शिक्षा पाना और जिन्दगी में जहॉ तक संभव हो सके भौतिक-सुखों को प्राप्त करने का प्रयास करना। इसलिए दीपक ने उन दिनों पंजाब युनिर्वसिटी कैम्प कॉलेज में

दर्शनशास्त्र की एम. ए. की पढाई भी चालू कर रखी थी। प्रात: सात बजे घर से निकलता एकेडमी में पढाता। दिल्ली के लम्बे फासले तै करता हुआ एक-दो स्थानों पर टयूशन करने जाता और फिर संध्या को कॉलेज पहुँचकर अपने थके बदन और सुस्त मगज में दर्शन की समस्याओं को बिठाने का प्रयत्न करता। लेकिन दीपक की हालत ऐसी थी, दिन भर टनूशन लेना श्याम को अपनी पढायी करना इस तरह से दिपक ने एम. ए. पूरा किया। बाद में दिपक को श्री कंवरमल्ल में मोरियल कोचिंग हाईस्कूल व कॉलेज तो ऐसे स्कूल कॉलेज में दीपक दसवी तथा प्रभाकर की श्रेणियों को पढाया करता था। यहॉ से प्रतिदिन 5 घण्टें तक सिर मारने के 75 रुपये मासिक मिलते थे। दीपक का मित्र निर्मोही हमेशा दीपक से प्रश्न करता था, "अब कहो एम. ए. हो गये "क्या प्रोग्राम है अब तुम्हारा"? दीपक ने जवाब दिया प्रोग्राम अमीर लोगों के होते है, हमारी तो अनिवार्य-स्थिती नमक, तेल, लकडी, जुटाने की ही है। कही नौकरी मिल जाए तो कुछ संभल पाऊं।" उसका मित्र कहता है, "नौकरी भी मिल जाएगी, ईश्वर के घर में देर है, अंधेर नहीं एक दिन दिपक के मन में खयाल आया, प्राईवेट मास्टरों की आर्थिक स्थिती क्या है। यह सोचता रहा ही डबल एम. ए. होने पर भी अच्छी नौकरी नहीं मिली?

महिने-भर में दीपक ने 5-6 इण्टरव्यू दे डाले कितने ही कॉलेजो के आचार्यो के चरण चुमे कई परिचय पत्र दौडाए परन्तु परिणाम वही मुर्गे की एक टांग। इण्टरव्यू तो अधिकत्तर लोगों की ऑखो में धूल झोंकने के लिए ही बुलाए गए थे। अधिकारियों को जिसे नियुक्त करना होता, वह तो पहले ही कर लिया जाता-आडम्बर-मात्र इस औपचारिकता का स्थान तो बाद का होता। जहॉ से साक्षात्कार का निमंत्रण मिलता, एक नई आशा लेकर दीपक वहा जाता लौटते समय हर बार लगभग एक ही जैसी स्थिती होती। जहॉ स्वयं कुछ प्रिन्सिपलों से मिलने को साहस किया वहॉ 'नो वैकेन्सी' के अतिरिक्त कहीं-कहीं झूठे वायदे, परामर्श खोखली सहानूभूती और उपेक्षित व्यवहार भी प्राप्त होता। मार्ग बतानेवाले अनेक मिलते किसी ने हाथ थामकर मंजिल तक

पहुँचाने की कृपा न की। परिचय पत्र तो शायद उन दिनों आपत्ति-पत्र छदमनाम बन गया था।

दीपक को अपने पर खीझ आती है। आज तक डबल एम. ए. होकर भी बेकारी का यह हाल। कभी सपने में भी न सोचा था। खयाल आता है कि मेरी आज की स्थिति से तो मेरे पुराने क्लर्क मित्र ही सुखी है। मैं ने महत्वाकांक्षाओ को लेकर क्या पाया पहले से बंधे वेतन से भी गया और अधिक शिक्षित होने के कारण किसी छोटी आसामी का दावेदार भी न रहा। वाहरी किस्मत।

इस उपन्यास में सहगलजी ने बेरोजगारी के बारे में एवं मुख्य नायक के जीवन से संबंधित अनेक समस्याओं को चित्रित किया है।

आधुनिक युग में शिक्षा का स्थान बहुत ही महत्वपुर्ण है। मगर दु:ख इस बात का है कि आज की शिक्षण संस्थाएँ सरस्वती मॉ की पवित्र प्रांगण न बनकर अनाचार, अनैतिकता, मूल्यहीन मनुष्यों की कार्यस्थल बन गई है, जहॉ आदर्श के झुठे पोषाख पहनकर बुरे कृत्य किए जाते है। महाविद्यालयों की स्थापना करना, अधिकतर अध्यापक टूयूशन लेने में व्यस्त होना, विद्यार्थियों का अध्यापकीय राजनिति का शिकार होना, हडताले, नारेबाजी, विद्यार्थी-परिषद के चुनाव, लडके-लडकियों में यौन सम्बन्ध, स्टाफ के नियुक्ति के लिए सिफारिश पर बल, अध्यापकों की लापरवाही आदि विषयों को लेकर सहगल जी ने अपने अधिकतर उपन्यासों में कटु-सच्चाई को उद्घाटित किया है। बेरोजगारी की समस्या तो देश में बढती जा रही है। सहगल जी ने अनेक प्रकार से शिक्षा के महत्व को व्यक्त किया है, और नजदिकी से अनुभव किया है। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य से इतना ही कहने की कोशिश जरुर कि है कि भारत देश के प्रति वे चिंतित है, तथा शिक्षा जगत् में घटनेवाले दृश्यों का आईना दिखाना एवं गुरुजनों का स्थानमान के प्रति पुनरुत्थान हो। यही सहगलजी की मंशा है।

निष्कर्ष

यही मानव उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी समाज अगर उन्हें रोजगार नहीं दे पाती है तो महाविद्यालय का जीवन समाप्त होने पर वे अवश्य कुंठाग्रस्त होंगे। इसलिए उच्च शिक्षा प्राप्त करके उन्हे, अपने उदरनिर्वाह के लिए एक अच्छी नौकरी की भी आवश्यकता है। शिक्षा के व्यापारीकरण, बाजारीकरण को रोकने हेतु केन्द्र सरकार कानून बनाये। शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार पर रोक लगे। अपने देश की विशेष करके सरकारी शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता सुधार हेतु ठोस योजना बने। सरकार के द्वारा भी नये शैक्षिक संस्थान शुरु करने की योजना बने। शिक्षा मात्र सरकार का दायित्व न होकर समाज भी अपने दायित्व का निर्वाह करे।

संदर्भ

1) उच्च शिक्षा (विकी पिडीया)
2) मनमोहन सहगल रचनावली-2004
निर्मल पब्लिकेशन्स, शहदरा दिल्ली-110094
3) Hindi Samay.com